IJAER/July-August 2023/Volume-12/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक भारतीय राजनीति में युवाओं का रोल

Ramawatar Meena
Assistant professor political science
Government College Karauli

सार

हमें ऐसे युवा नेताओं की सख्त जरूरत है जो अपनी असीम, क्षमता निष्ठा और कार्य एवं नैतिकता से हमारे देश को प्रेरित कर सकें। निश्चित रूप से, पिछले 62 वर्षों में बहुत कुछ बदल गया है, लेकिन अगर नेताओं की नई पीढ़ी ने नेतृत्व किया होता तो परिवर्तन की दर काफी भिन्न होती।जब भारत को आजादी मिली, तो गांधी ने
युवाओं को उनकी आजादी के लिए लड़ने के लिए एक जुट किया।इस आंदोलन का नेतृत्व नेहरू जैसे युवा नेताओं ने किया था लेकिन अभी ऐसी स्थिति नहीं है. इन दिनों, राहुल गांधी, सचिन पायलट, वरुण गांधी आदि जैसे युवा नेता बहुत कम हैं, लेकिन वे भी उन शक्तिशाली परिवारों की बदौलत राजनीति में धूम मचा रहे हैं, जिनसे वे संबंध रखते हैं। ऐसे युवा नेता को ढूंढना जो राजनैतिक परिवार से न हो, बेहद मुश्किल काम है। 25 वर्ष से कम आयु के लगभग 670 मिलियन व्यक्तियों के साथ, यंग इंडिया फाउंडेशन युवा प्रतिनिधित्व की आवश्यकता और युवा अधिकारों के महत्व पर ध्यान दिलाने के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है। इसके अलावा, भारत में उम्मीदवारी की उम्र को कम करने के प्रयास रहा है,

मुख्यशब्दः–यूथ, भारतीय राजनीति, नेता, विकास

आधुनिक भारत के युवा हमारे देश और दुनिया भर की समस्याओं से अवगत हैं। मौका मिलने पर वे देश की राजनीतिक स्थिति को बेहतरी के लिए बदलने को तैयार होंगे। दूसरा कारण यह हो सकता है कि युवाओं को यह बहाना बनाकर खुद को साबित करने का अवसर नहीं दिया जाता कि वे देश के शासन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए पर्याप्त अनुभवी नहीं हैं। लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक दल पुराने नेताओं के एकाधिकार के तहत काम करते दिख रहे हैं। वृद्ध लोगों को यह एहसास होना चाहिए कि उन्हें आधुनिक गतिविधियों पर नियंत्रण रखने के लिए युवा लोगों के लिए रास्ता बनाना चाहिए।

युवाओं से संबंधित कई नीतिगत निर्णयों में उम्र को हमेशा एक मार्ग दर्शन के रूप में इस्तेमाल किया गया है। मतदान, ड्राइविंग, वयस्क फिल्में और विवाह की अनुमति उम्र के आधार पर निर्धारित की गई है। हालाँकि उम्र की परिभाषा पर व्यापक रूप से बहस हुई है संयुक्त राष्ट्र और अधिकांश देशों ने 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं को वर्गीकृत किया है,जबकि दक्षिण में कई देशों ने विकासशील देशों में देर से मिले अवसरों और परिवार से देर से मिली आजादी को इसका कारण बताते हुए उस सीमा को बढ़ा दिया है।

35 वर्ष तक. युवाओं के समाजशास्त्र की अन्य गैर– कालानुक्रमिक परंपराओं पर सिद्धांतकारों के बीच कुछ हद तक आम सहमति है। (।) युवा संक्रमण, (ठ) युवाविकास, (ढ) युवा उपसंस्कृति के रूप में चित्रित (ढ) कार्ल मैनहेम का पीढ़ीगतसंदर्भ सिद्धांत । युवा को अक्सर उस उम्र के बीच के व्यक्ति के रूप में दर्शाया जाता है जब वह अनिवार्य शिक्षा छोड़ देता है,और वह उम्र जिस पर वह विभिन्न देशों और कुछ एजेंसी द्वारा अलग–अलग संदर्भों में अपना पहला रोजगार पाता है। युवा ऊर्जा का प्रतीक है, और राजनीति अधिकार, प्रतिनिधित्व, न्याय और परिवर्तन के बारे में है। इस प्रकार, युवाओं और राजनीति का संश्लेषण आशा, क्रांतिकारी विचार परिवर्तनों और उज्जवल भविष्य के बारे में है। यह विचार कि आबादी में युवाओं का एक बड़ा हिस्सा राजनीति में युवाओं की बड़ी भूमिका को जन्म देगा, इस धारणा पर आधारित है कि वे एक अलग राजनीतिक निर्वाचन क्षेत्र का गठन करते हैं अलग राजनीतिक प्राथमिकताओं, दृष्टिकोण और मतदान पैटर्न के साथ आबादी का एक वर्ग।युवा देश के भविष्य की आशा हैं। हालाँकि, केवल चरित्र, बुद्धिमत्ता, आज्ञाकारिता वाले युवा ही राष्ट्र की नियति को आकार दे सकते हैं। ऊर्जा विहीन, जड़ता और नीरसता से ग्रस्त, मानसिक स्फूर्ति और साहस विहीन युवावस्था हमें कहीं नहीं ले जायेगी। मन और शरीर में सौम्य रूप से गठित युवावस्था केवल अपंगों की पीढ़ी को जन्म देती है। इस कारण कभी– कभी युवाओं के कंधों पर भविष्य की आशा रखने वालों के मन में घोर निराशा और हताशा आ जाती है।

युवा और शिक्षित लोग एक बढ़ते राष्ट्र की रीढ़ बनते हैं। चूँकि वे युवा हैं, उनका दिमाग ताजा और नवीन है। उनमें जोखिम लेने और चुनौतियां स्वीकार करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। वे भ्रष्टाचार के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। इसलिए, किसी राष्ट्र के विकास के लिए उनका कार्य अपरिहार्य है। उनका साहस समाज के विकास में योगदान दे सकता है। युवा राजनेताओं, युवा पत्रकारों, युवा छात्रों और राष्ट्रीय राजनीति के नेताओं को आम जनता के लिए एक रोल मॉडल के रूप में काम करना चाहिए और पूरी व्यवस्था में क्रांति लानी चाहिए कलाम के दृष्टिकोण को पूरा करना चाहिए–2030 युवाओं के साथ राजनीति की भूमिका और संबंध को रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में लेना होगा, वे भ्रष्टाचार मुक्त समाज की आशा हैं जो प्रभावी ढंग से और ईमानदारी से नैतिकता को बढ़ावा देंगे। केवल सकारात्मक दृष्टिकोण ही यह सुनिश्चित करेगा कि भारतीय युवा रिश्वतखोरी के काले बादलों से घिरे देश को रोशन करेंगे।यह भविष्य की बीमारी को ठीक करने के लिए सबसे अच्छी दवा है, लेकिन वर्तमान परिदृश्य में भी महत्वपूर्ण कारक है जो हमें समस्या काव्य वस्थित और पूर्ण समाधान देगा। आज के समय में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

1. राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका का अध्ययन करना
2. मेहल पंचायत के ग्रामीणों की स्थिति में सुधार के उपाय सुझाना।

शोधपद्धति

इस खंड में अनुसंधान डिजाइन, अध्ययन का ब्रह्मांड, नमूना, डेटा संग्रह से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गई है। इस अध्ययन में हमने खोज पूर्ण और वर्णनात्मक डिजाइन का उपयोग किया है

अध्ययन का क्षेत्र :– मेहल पंचायत का चयन एवं मेहल पंचायत के 11 गांवों का चयन कियागया।

डेटासंग्रहण

यह अध्ययन प्राथमिक और माध्यमिक दोनों डेटा स्रोतों पर आधारित था। प्राथमिक डेटा ग्रामीणों के साथ विभिन्न गपशपों से एकत्र किया गया था। अध्ययन के उद्देश्य से गांव के लोगों के साथ निर्धारित साक्षात्कार, बातचीत और चर्चाओं की मदद से प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया था। प्राथमिक डेटा संग्रह के उद्देश्य से उत्तरदाताओं को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। साक्षात्कार कार्यक्रम मूल रूप से हिंदी में मुद्रित होते थे और प्रश्न उनकी स्थानीय भाषा और हिंदी में पूछे जाते थे। साक्षात्कार अनुसूची में 18 प्रश्न हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए किसभी जानकारी दर्ज की गई है, प्रत्येक साक्षात्कार के अंत में साक्षात्कार अनुसूचीकी दोबारा जाँच की गई। माध्यमिक डेटा हिमाचल प्रदेश की सांख्यिकीय रूपरेखा, इंटरनेट, प्रकाशित और अप्रकाशित पुस्तकों आदि से एकत्र किया गया हैं।

फोकस ग्रुप चर्चा–सांस्कृतिक मानदंडों, समूह की गतिशीलता और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि इकट्ठा करने के लिए पुरुष, महिला और बच्चों के रूप में उत्तरदाताओं के साथ गहन बातचीत की गई।

चित्र1:उत्तरदाताओंकेसाथबातचीत

राष्ट्रीय विकास में युवाओं की भूमि का राष्ट्र निर्माण या राष्ट्रीय विकास शब्दकाप्रयोगआमतौरपरएकसमावेशीऔर लोकतांत्रिक तरीके

से एक राष्ट्र में सामाजिक एक जुटता, आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक स्थिरता के निर्माण में सभी नागरिकोंको शामिल करने की रचनात्मक प्रक्रिया को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। भारत की लगभग 34: जनसंख्या युवाओं की है। उनमें राष्ट्र को बदलने और राष्ट्र निर्माण की शक्ति है। हर देश में युवा एक मूल्यवान मानव संसाधन हैं। वे परिवर्तन, प्रगति और नवप्रवर्तन की आकांक्षाएं रखते हैं और जिम्मेदारी निभाते हैं। युवा समाज को बना या बिगाड़ सकते हैं। परंपरा और आधुनिकता के बीच हमेशा खींचतान चलती रहतीहै, जिसके कारण अक्सर पुरानी पीढ़ी युवाओं को गलत समझती है। अपरिपक्वता, अनुभवहीनता और विचारहीन कार्य कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिनका श्रेय उनके बड़ों ने उन्हें दिया है। राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान के अनुसार, भारत एक युवा राष्ट्र है और इसके युवा देश की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न और आवश्यक हिस्सा हैं। भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, देश में युवा आबादी का आकार 422 मिलियन (219 मिलियन पुरुष और 203 मिलियन महिलाएँ) है, जो भारत की जनसंख्या का 41: से अधिक है। जनसंख्या अनुमान के अनुसार आने वाले वर्षों में 15–34 वर्ष आयु वर्ग की युवा आबादी बढ़नेकी उम्मीद है। 2011 की जनगणना में युवा आबादी 77 मिलियन बढ़ी 2011–21 की अवधि में, यह संख्या 34 मिलियन (राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान) बढ़ी

युवा दिमाग अधिक तरोताजा, उज्ज्वल, आधुनिक और नवीन होगा जो राष्ट्र की प्रगति में मदद करता है। लेकिन युवाओं को राष्ट्र के उत्थान के लिए अपने विचारों और नीतियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए। विचारों को व्यक्त करने और अपनी नीतियों को लागू करने का एकमात्र तरीका राजनीति है। यदि युवाओं के हाथ में सत्ता दे दी जाए तो निश्चित रूप से 2040 में भारत एक विकसित राष्ट्र बन जाएगा। युवाओं को राजनीति में देश सेवा का माध्यम मानने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्हें भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए प्रेरित कर शिक्षा और रणनीतियों पर ध्यान देने के साथ, साथ भ्रष्टाचार विरोधी अभियानों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। युवा सशक्तिकरण के साथ युवाओं की ऊर्जा और क्षमता को ध्यान में रखते हुए, संयुक्त राष्ट्र साथने 1980 में एक प्रस्ताव पारित कर वर्ष 1985 को अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के रूप में नामित किया।संयुक्तराष्ट्र साथ ने अपने सदस्य देशों को निर्देश दिया पुना कार्यक्रम 1980 में ही शुरू हो जाना चाहिए औरवर्ष 1985 में कार्यक्रमों की परिणति होनी चाहिए।

राष्ट्रीय युवा नीति, 2003 को युवाओं को नई चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करने के लिए डिजाइन किया गया है और इसका उद्देश्य उन्हें राष्ट्रीय विकास के कार्य में सक्रिय और प्रतिबद्ध भागीदार बनने के लिए प्रेरित करना है।

- वे पिछड़े हैं.
- उन्हें गरीब माना जाता है.
- वे अपनी आय के स्रोत के रूप में विशेष रूप से कृषि पर निर्भर हैं।
- कोई बेहतर शिक्षा नहीं.

- उनके उत्थान के लिए सरकारी, संस्थागत समर्थन।
- राजनीतिक रूप से भी उनका प्रतिनिधित्व बहुत कम है।
- केवल कुछ ही परिवार कृषि के अलावा अन्य स्रोतों से आय में लगे हुए हैं।
- उनके पास आयका कोई स्थायी स्रोत नहीं है।
- फिर भी वे सरकार की विभिन्न नीतियों से अनियिक्ष हैं।

परिणामों से यह भी पता चला कि 60ः उत्तरदाताओं के पास प्राथमिक से मैट्रिक (दसवींपरीक्षा) और उससे ऊपर के स्तर तक की शिक्षा थी। उत्तरदाताओं में से एक चौथाई से थोड़ा अधिक 67ः क्रमशः मजदूर, खेती, किसानी करने वाले थे।

उपसंहार

इस विश्लेषणात्मक अध्ययन का सार यह सिद्ध करता है कि भारतीय युवाओं का राजनीतिक

क्षेत्र में योगदान एक महत्वपूर्ण और आवश्यक पहलु है। युवाओं के नवाचार, उत्साह, और समझदारी ने राजनीतिक प्रक्रिया में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की है। इस अध्ययन ने दिखाया है कि युवाओं के सक्रिय भागीदारी से राजनीतिक प्रक्रिया में सकारात्म क परिवर्तन और सुधार हो सकते है। युवाओं की सामाजिक सचेतना, राजनीतिक समक्ष और नागरिक दायित्व के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। इस अध्ययन ने यह भी प्रमाणित किया है कि युवाओं के राजनीतिक समर्थन, नेतृत्व, और शासन क्षमता में वृद्धि के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। अंत में, यह अध्ययन भारतीय युवाओं के राजनीतिक योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद करेगा और उनकी सामाजिक सचेतना और सामाजिक सद्भाव के प्रति उनकी दायित्व शीलता को बढ़ावा देगा। इससे भारतीय

युवाओ को राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जो राष्ट्रीय उत्थान और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

संदर्भ

1- आचार्य,मंगेश. ।भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका : एक राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन। 2022.10.13140 ध्आरजी.2.2.20441.804851

2- रीबा,जो बा और पाणिग्रही, पी.(2021)।अरुणाचल प्रदेश में युवा नेतृत्व का उभरता हुआ पैटर्न एक विश्लेषण। वैज्ञानिक अनुसंधान केअंतर्राष्ट्रीयजर्नल. 10.9790ध्0837–2602020110.

3- कुमार, सतीश और शर्मा,अमित और वर्मा,वरिंदर। (2021)। सोशल मीडिया युवाओं के बीच सामाजिक और राजनीतिक समावेशन का एक उपकरणः भारतीय विश्वविद्यालय के छात्रों का एक अध्ययन। सामाजिक विज्ञान और मानविकी के वर्तमान शोध जर्नल।

4- पारख, दिशांत.(2020)।चुनावी राजनीति में युवाओं का प्रतिनिधित्वः भारतीय चुनाव प्रणालियों का एक विश्लेषण। जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स एंड गवर्नेस .8.43–59.

5- चौधरी, प्रमोद. (2023)। भारत की राजनीतिक व्यवस्था लोकतंत्र के लिए किस प्रकार लाभदायक या हानिकारक है इसका एक अध्ययन। कला और मानविकी में अनुसंधान के लिए एकीकृत जर्नल।3.1–6.10.55544ध् इजरा .3.1.1.

6- तिवारी, भुवन एवं सिंह, भूपाल। (2023)। कोविड–19 महामारी के बाद भारतीय राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव। कला और मानविकी मे ंअनुसंधान के लिए एकीकृत जर्नल।3.105–112.10.55544ध्इजराह.3.3.17.

7- कुमार, आशुतोष. (2019)। भारत में राज्य स्तर पर राजनीतिक नेतृत्वः निरंतरता और परिवर्तन।भारत समीक्षा.18.10.1080ध्14736489.2019.16162601264–287.

8- महमूद एस और अवान, डॉ. अब्दुल । (2019) 1 राजनीति में युवाओं की सक्रियता में सोशल मीडिया की भूमिका:जिला खाने वाल का एक केस अध्ययन।
5.718–742.

9- रीबा, जोबा और पाणिग्रही, पी और छात्र, डॉक्टरेट। (2022)। अरुणाचलप्रदेश में युवाओं की सोशल मीडिया और राजनीतिक जागरूकताः चयनित जिलों का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी साइकिल रिसर्च. खंडग्प्प्.284–299.

10- राज.एम, का सिमिर। (2014)। आयरलैंड और भारत में युवा नीतिः एक तुलनात्मक अध्ययन।

11- सिंह, प्रेम. (2018)। हरियाणा में सोशल मीडिया और युवाओं की राजनीतिक भागीदारी।

12- सक्सेना, मयंक और अधाना, दीपक। (2020) 1 भारतीय राजनीति के बदलते स्वरूप में सोशल मीडिया की भूमिका रू फेसबुक के

विशेष संदर्भ में एक अध्ययन।

13- डार, शौकत और नागरथ, डॉली।(2022)।राष्ट्र निर्माण में
युवाओं की उल्लेखनीय भूमिका है। कानून एवं अर्थशास्त्र की समीक्षा.02.12–17.

14- चौधरी, रितेश और चौधरी, शोभा। (2020)। भारत में राजनीतिक अभियान पर सोशल मीडिया की भूमिका पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ क्रिटिकल रिव्यूज.7.10.31838ई जेसीआर.07.04.453.

15- शुमि लो वए.युवा परिवेश में चुनावी नीति के गठन के कारक पोलिटबुक,
2012,पृष्ठ75–85।

16- क्रिजिस्तो फइवानेक।भारतीय पार्टी प्रतीकों की दिलचस्प कहानियाँ।राजनयिक. 2016–2017.

17- शौरी, अरुण.संसदीय प्रणाली हमने इसे क्या बनाया है, हम इसे क्या बना सकते हैं। नईदिल्ली रूपा एंड कंपनी,2007।

18- शौरी,अरुण.शासन और स्केलेरोसिस जो शुरू होगया है। नई दिल्ली ए एस ए प्रकाशन,2005।

19- श्रो गॉफ बी.मानव विकास की सांस्कृतिक प्रकृति ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,न्यूयॉर्क,एनवाई,2003।

20- परसुरामन एस.के.भारत में युवाओं की एक प्रोफाइल।नईदिल्ली स्वास्थ्य
एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारतसरकार,2009